(कविता)

बेटी

वो बेटी थी...
इसलिए बोझ का नाम दे दिया,
वरना उसके भी सपने थे,
पर “वो बेटी है” कहकर समाज ने तोड़ दिया।

आख़िर क्यों बेटों के लिए ही
खुले हैं सारे दरवाज़े?
खैर छोड़ो... वो बेटी है ,
अब तो खिड़कियों ने भी मुँह मोड़ दिया।

सोचा था वो बड़े स्कूल की
सीढ़ियाँ चढ़ जाए,
खैर... वो बेटी थी,
उसी के घर की दहलीज़ ने रोक दिया।

ना स्कूल यूनिफॉर्म बुरी ,
ना दुपट्टा गलत,
खैर “वो बेटी है” कहकर
यूनिफॉर्म की जगह दुपट्टा ओढ़ा दिया,
उसका बचपन ही छीन लिया।

यूनिफॉर्म में वो खूब खिलती,
आँखों में सपने झिलमिलाते,
पर दुपट्टे में जैसे
होंठ कुछ कह न पाते...

“वो बेटी है” कहने वाले समाज ,
जरा सोचो...
वो अपने घर की दहलीज़ भी लांगे,
और यूनिफॉर्म में स्कूल की सीढ़ियाँ भी चढ़ जाए...
उसका दुपट्टा उसका सम्मान बने,
उसके अरमान न छुपा जाए...

विंकल कुमार यादव
जंतु विज्ञान विभाग
2024-28
241814